शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

महाभारत के लेखन कार्य में श्रीगणेश के चिन्तन के क्षण

डॉ..दीपिका शुक्ला
व्याख्याता(संस्कृत)
भाषा अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

महर्षि वेदव्यासजी ने जब मानसिक धरातल पर महाभारत ग्रंथ की रचना कर ली तब वे इसके लेखन कार्य हेतु उपयुक्त व्यक्ति की तलाश करने लगे। बहुत विचार करने पर भी उन्हें इस कार्य के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला फलतः ग्रंथ का लेखन कार्य रुका रहा। उनकी इस परेशानी को जानकर सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी स्वयं उनके समक्ष प्रकट हुए तथा उन्हें परामर्श दिया कि "हे महर्षि आप इस ग्रंथ के लेखन कार्य हेतु श्रीगणेश का स्मरण कीजिए।"1 ब्रह्माजी के परामर्श के अनुसार वेदव्यास ने जब श्रीगणेश का स्मरण किया तो वे तत्काल महर्षि के समक्ष उपस्थित हो गये। स्वयं को बुलाये जाने का कारण जानकर वे वेदव्यासजी का कार्य सम्पन्न करने हेतु सहर्ष तैयार हो गये। परन्तु गणेश ने व्यास के समक्ष यह शर्त रखी कि यदि आप निरन्तर बोलते रहे तथा मैं लगातार लिखता रहूँ तब ही मैं इस ग्रंथ के लेखन कार्य में सहायक बन सकता हूँ। यदि लेखन कार्य में क्षणभर के लिए भी मेरी लेखनी रुक गयी तथा आप आगे का पद बोलने में असमर्थ रहे तब मैं यह कार्य पूर्ण करने में असमर्थ रहूँगा तथा इस कार्य को यथावत् छोड़कर चला जाऊगां तथा आप मुझ पर किसी प्रकार का कोई दोषारोपण नहीं कर सकेंगें। गणेश की यह शर्त सुनकर महर्षि बोले आप जो कुछ भी लिखेगें, उसे लिखने से पूर्व स्वयं भली-भांति समझ लेंगे तथा स्वयं संतुष्ट होने के उपरान्त ही उसे लिखेंगे। ताकि इस ग्रंथ का स्वाध्याय करते समय पाठक को समझने में किसी प्रकार की कोई भ्रान्ति उपस्थित न हो। इस ग्रंथ का अध्ययन करते हुए सर्वकाल में न तो किसी प्रकार की विसंगति नजर आए ओर न कहीं विस्मय अथवा असमंजस की स्थिति ही निर्मित हो सके। अतः आप स्वयं भली प्रकार से समझ लेने के उपरान्त ही कोई पद लिखेंगे। वेदव्यास के इस कथन में समाहित लोक कल्याण पर विचार करते हुए गणनायक श्रीगणेश महाभारत ग्रंथ के लेखन कार्य हेतु तत्पर हो गये। इस प्रकार परस्पर सहमति होने के उपरान्त महाभारत ग्रंथ की रचना आरम्भ हुई। प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीगणेश के चिंतन के क्षणों का अध्ययन किया गया है।

महाभारत की रचना प्रक्रिया

इतिहास कथा रूप में कहे जा रहे तथा लिखे जा रहे इस ग्रंथ को तत्काल ही लिपिबद्ध करने के उपरान्त श्रीगणेश आगे के पद की प्रतीक्षा करने लगते थे। गणेश की इस तत्परता के कारण वेदव्यास को लगातार बोलते रहना होता था। शीघ्र गति के कारण श्रीगणेश क्षणभर के लिए भी महर्षि को विश्राम करने या किसी अन्य कार्य को सम्पन्न करने का अवसर प्रदान नहीं करते थे। वेदव्यास मनुज रूप में व श्रीगणेश देव रूप में यह कार्य सम्पन्न कर रहे थे। अतःगणेश के लिए लगातार बैठकर लिखते रहना संभव था, किन्तु वेदव्यास के लिए यह सब करना असंभव हो गया था। अतः ऐसी विकट स्थिति में नित्यकर्म करने के लिए वेदव्यास द्वारा 'कूट श्लोक' की रचना की जाने लगी। ये कूट श्लोक स्वगुंफित होते थे। इनके प्रकट शाब्दिक अर्थ तथा श्रुति कथन की व्याख्या करने हेतु पिरोए गये गूढ़ार्थ में अतिशय

भिन्नता रहती थी। इन श्लोकों का गूढ़ार्थ तत्वार्थ को धारण करने वाला होता था तथा प्रकट शाब्दिक अर्थ लौकिक आचार-विचार को प्रकट करता था। इसके साथ ही यह लोकरंजन का कारण भी बनता था। ऐसी स्थिति में प्रकट शाब्दिक अर्थ एवं गूढ़ार्थ को स्वयं ही समझने तथा इनकी परस्पर संगति पर विचार करने के लिए गणेश को भी किंचित देरी के लिए रुक जाना पड़ता था। इतिहास कथा रुप में ग्रंथ को लिखने के पूर्व स्वयं ही उन्हें आश्वस्त होना पड़ता था कि उनके लेखनकार्य में कहीं कोई विसंगति प्रतिभासित न हो सके। अतः पूर्णरूपेण संतुष्ट होने के उपरान्त ही वे अगला पद(श्लोक) लिखते थे। इन कूट श्लोकों को स्वयं समझ लेना ही विद्यानिधि गणेश के लिए 'चिन्तन के क्षण' होते थे। यही वह अन्तराल होता था जिसमें महर्षि वेदव्यास आगे के पद पर विचार करने या अपने नित्यकर्म को सम्पन्न करने में समर्थ हो जाते थे तथा आवश्यक कार्य का निष्पादन करने हेतु उन्हें समय मिल जाता था। इस प्रकार महाभारत ग्रंथ लिखा गया।

कथारूप में होने के कारण इस ग्रन्थ को इतिहास ग्रंथ तथा गूढ़ार्थ व्याख्या करने के कारण इसे पंचम वेदग्रंथ होना कहा गया है। इस ग्रंथ में आये कूट श्लोकों के संबंध में स्वयं ग्रंथकार का कथन है कि-"इस महाभारत में 8800 श्लोक ऐसे हैं, जिसका अर्थ मैं स्वयं समझता हूँ, शुकदेव समझते हैं और संजय समझते हैं या नहीं,इसमें संदेह है। मुनिवर! वे कूट श्लोक आज भी इतने सुदृश गुथे हुए हैं कि उनका रहस्य भेदन नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनका अर्थ भी गूढ़ है और शब्द भी योग वृत्ति एवं रूढ़वृति आदि रचना वैचित्र्य के कारण गम्भीर है। सर्वज्ञ गणेश जी भी उन श्लोकों पर विचार करते समय क्षणभर के लिए ठहर जाते थे।"2

वेद में आये श्रुति कथन की व्याख्या करने हेतु महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखे जा रहे इस ग्रंथ में कूट श्लोकों का अभिधा आधारित शाब्दिक अर्थ लौकिक आशय को प्रकट करता हुआ लोकरंजन का कारण उपस्थित करता है यह प्रेय मार्ग की ओर ले जाता है तथा इनका गूढ़ार्थ ही श्रुति कथन की व्याख्या करने वाला होता है। इतिहास कथारूप में यह ग्रंथ इस संसार वृक्ष के अविनाशी सनातन स्वरूप का परिचय प्रदान करता है। इसके अविनाशी बने रहने का कारण उपस्थित करता है, वहीं गूढ़ार्थ रूप में "यह सबकुछ एक परम पुरुष परमात्मा है।"3

इस श्रुति कथन का बोध प्रदान करने वाला होता है। इन कूट श्लोकों का शाब्दिक अर्थ 'अपरा विद्या' की विषय सामग्री होता है। तथा गूढ़ार्थ "परा विद्या" को प्रकट करनेवाला होता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी लौकिक जीवन यात्रा को पूर्ण करने तथा मृत्यु उपरान्त सद्गति को प्राप्त करने हेतु एक 'अपरा' और दूसरी 'परा' इन दोनों ही विद्याओं को एक साथ जानना चाहिए।4 इन दोनों ही विद्याओं को हमारे द्वारा 'अज्ञान के अंधकार ' तथा 'ज्ञान के प्रकाश' रूप में जाना गया है। इन कूट श्लोकों का शाब्दिक अर्थ ही अज्ञान के तिमिर में किये जाने वाले कार्य को प्रकट करता है। इन कूट श्लोकों का यह प्रकट अर्थ अविद्या को अपनाकर किये जाने वाले कार्य की व्याख्या करनेवाला होता है तथा कर्म बंधन का कारण बनता है। अतः इन कूट श्लोकों के निहितार्थ या इनके गूढ़ार्थ को जानने तथा लोक व्यवहार की मान्यताओं के आधार पर उन पर विचार करने तथा परस्पर संगति बिठाने हेतु

विद्यानिधि गणेशजी को भी योगवृत्ति रूप समाधिस्थ चेतना का आश्रय लेकर किंचित देरी के लिए रुक जाना पड़ता था। महाभारत ग्रंथ कथारूप होकर इतिहास लक्षणों से युक्त है। यह सृष्टिचक्र को गति प्रदान करनेवाला है। अनपे कथा रूप में यह अतीत के इतिहास को प्रकट करता हुआ सा भासता है। यह लोकसत्ता के आसन पर बैठकर मोहग्रस्त अवस्था में किये जाने वाले दुष्प्रयास(कुप्रयोजन) एवं दुःशासन (कुव्यवस्था) के कारण प्रकट करता है तथा भविष्य के लिए सुव्यवस्था पर आधारित 'विजय पथ' को आलोकित करता है। अतः इसे इतिहास ग्रंथ होना कहा गया है। किंतु इन कूट श्लोकों का निहितार्थ या गूढ़ार्थ ही इस महाभारत ग्रंथ को 'पंचम वेद' होने की संज्ञा प्रदान करते है। यह लौकिक संस्कृत एवं वैदिक संस्कृत की भिन्नता को जानने में सहायक होता है। गूढ़ार्थ को अपना लेने पर यह तत्वतः 'अक्षर पुरुष' का बोध प्रदान करता हुआ प्रत्येक पाठक को अपने ही आत्मा के मित्र और शत्रु स्वरूप 'बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः'5 का परिचय प्रदान करता हुआ आत्मजयी बनने एवं सबके प्रति मित्रवत् आचरण करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इन कूट श्लोकों का यह गूढ़ार्थ ही महाभारत ग्रंथ के 'भारत संहिता' स्वरूप की व्याख्या करता है तथा इसके मूलरूप 'जयसंहिता' स्वरूप को जानने में सहायक हो जाता है। वेदव्यास के द्वारा महाभारत ग्रंथ की रचना के गानरूप में प्रयोग किये कुल छः शब्द एका, एकम्, दश, शत, सहस्र शब्द गूढ़ार्थ को धारण करने वाले है।इन कूट शब्दों का प्रकट शाब्दिक गणनात्मक अर्थ लौकिक व्यवहार का आधार बनकर कर्म बंधन का कारण उपस्थित करता है तथा संग्रहवृत्ति का कारण हो जाता है। यह अधोगति की ओर ले जाता है, वहीं इन कूट शब्दों का गूढ़ार्थ अमृतमय सर्वरूप अक्षर स्वरूप आत्मा या उस परमात्मा का परिचय प्रदान करने वाला एवं उर्ध्वगति की ओर ले जानेवाला होता है। यह एक साथ 'सम्भूतिं च विनाश च'6 को जानने में सहायक होता है। श्रुति के इस गूढ़ार्थ को जान लेना ही बालबुद्धि का परित्याग करते हुए ज्ञानवृद्ध हो जाना होता है। महर्षि वेदव्यास द्वारा बोले गये तथा गणेश द्वारा लिखे गये कतिपय कूट श्लोकों के अभिधेय अर्थ तथा उनके गूढ़ार्थ जिनके आधार पर श्रीगणेश के चिंतन के क्षण की जानकारी मिलती है।

यह इस प्रकार हैः- 1.महाभारत ग्रंथ के सभापर्व में आये 'शिशुपाल के वध प्रसंग' इतिहास कथा रूप में वर्णन किया गया है कि कृष्ण ने अपनी बुआ के लड़के शिशुपाल द्वारा किये गये 'शत अपराध' को क्षमा करने के उपरांत ही उसका वध किया था। यहाँ विचारणीय है कि यह 'शत अपराध' करना क्या है ? क्या यह गणनात्मक रूप में "सौ अपराधों" को क्षमा करना है या कि "अपराध की पूर्णता" पर शिशुपाल को ततकाल ही दण्डित किया जाना ? महाभारत के वनपर्व में दण्डनीति का वर्णन करते हुए वेदव्यास ने प्रकट किया है कि-"जो व्यक्ति समझ-बूझकर किये हुए अपराध को भी कर लेने के पश्चात अनजान में किया हुआ बताते हों, उन उद्दण्ड पापियों को थोड़े से अपराध के लिए भी अवश्य ही दण्ड देना चाहिए। सब प्राणियों का एक अपराध तो क्षमा कर ही देना चाहिए। यदि उनसे दोबारा अपराध बन जाये तो थोड़े से अपराध के लिए भी उसे दण्ड देना आवश्यक है।"7 यहाँ व्यासजी ने केवल एक ही अपराध क्षमा योग्य होना वर्णन किया है तथा द्वितीय बार अपराध करने पर

अवश्य ही दण्डित करने का विधान किया है। शिशुपाल के प्रसंग में व्यासजी ने वर्णन किया है कि शिशुपाल के जन्म के समय उसकी चार भुजाएं व तीन नेत्र थे उसके रूप को देखकर माता-पिता ने उसका परित्याग करने का निश्चय किया था। किन्तु देववाणी के द्वारा ज्ञात होने पर कि- 'इस बालक की मृत्यु उस व्यक्ति के द्वारा होना निश्चित है जिसकी गोद में जाने पर इसकी दो अतिरिक्त भुजाएं पृथ्वी पर गिर जाएँ व तीसरा नेत्र ललाट में लीन हो जाए। वही इसकी मृत्यु का निमित्त बनेगा।"8 इस बात को सुनकर उसके पिता दमघोष एवं माता श्रुतश्रवा द्वारा अपने पुत्र शिशुपाल का लालन-पालन किया गया। उस बालक को देखने आये अनेक राजाओं की गोद में भी उस बालक की अतिरिक्त भुजाएं गिरी नहीं न ही तीसरा नेत्र लुप्त हुआ। किंतु श्रीकृष्ण की गोद में जाने पर शिशुपाल की अतिरिक्त भुजाएं पृथ्वी पर गिर गयी व तीसरा नेत्र ललाट में लुप्त हो गया। इस दृश्य को देखकर व श्रीकृष्ण के हाथों अपने पुत्र की मृत्यु जानकर माता ने उसकी जीवन रक्षा का वरदान श्रीकृष्ण से मांग लिया। इस पर श्रीकृष्ण ने कहा था -"हे बुआ! तुम्हारा पुत्र अपने दोषों के कारण मेरे द्वारा वध के योग्य होगा, तो भी मैं इसके शत(अर्थात् पूर्णता को प्राप्त) को क्षमा करूंगा तुम अपने मन में शोक न करो।"9 महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में जब शिशुपाल श्रीकृष्ण की अग्रपूजा करने का विरोध करने लगा तो श्रीकृष्ण द्वारा उसके इस अपराध को क्षमा कर दिया गया था। किंतु जब वह श्रीकृष्ण के क्षमा कार्य का उपहास करने लगा, तब श्रीकृष्ण ने सभा में उपस्थित राजाओं के समक्ष शिशुपाल की माता को दिए वचन का उल्लेख करते हुए अपने सुदर्शन चक्र के द्वारा शिशुपाल का वध तत्काल ही कर दिया गया। इस प्रसंग में व्यासजी ने श्रीकृष्ण के प्रति किये गये गणनात्मक रूप से सौ अपराधों का वर्णन कहीं नहीं किया गया है। इस प्रकार यहाँ 'शत' शब्द का गणनात्मक अर्थ अनृत् रूप में अज्ञान या अविद्या का कारण बना हुआ है। यह शाब्दिक अर्थ कथारूप में मनोरंजन अवश्य करता है, किंतु समाज में व्यवस्था अथवा विजय का कारण बनता नहीं है। यह गणनात्मक अर्थ ही इस जगत् में पराभव का कारण होता है, जिसे श्रुति ने 'सत्यमेव जयते नानृतं'10 कहा है। इस प्रकार यहाँ अपराध शतं क्षाम्यं लिखने के पूर्व 'शत' शब्द की प्रासंगिकता तथा इसके गूढ़ार्थ एवं शाब्दिक अर्थ की संगति पर विचार करने के लिए श्रीगणेश को किंचित देरी के लिए रूक जाना पड़ता था। गणेश विचार करने लगे कि जब कभी यह शाब्दिक अर्थ इस भारत भूमि पर दण्ड व्यवस्था को पूर्णतः असफल करेगा तब-तबही अन्तस्थ प्रभु प्रसाद स्वरूप इस कूट शब्द के गूढ़ार्थ को जानकर व्यवहार जगत् में अपना लेना ही इस भारत भूमि पर अराजकता के निवारण का आधार उपस्थित कर देगा। यह उद्दण्ड अपराधियों को दण्डित करने का श्रुति सम्मत कारण बन जायेगा। श्रीगणेश यही सोचकर अतिआह्लाद का अनुभव करने लगे थे कि 'दश','शत' एवं सहस्र शब्द का यह गूढ़ार्थ का जान लिया जाना ही उस विराट् पुरुष को प्रकट करने वाला होकर युगात्मक काल के अन्त का कारण उपस्थित कर देगा तथा इस देवभूमि पर सुव्यवस्था का जनक हो जायेगा। यह सब सोचते हुए मन की प्रफुल्लितावस्था को प्राप्त कर वे स्वयं कुछ देर रूकने को विवश हो गये थे।

2. भारतीय जीवन परंपरा में 'शिलालेख' किसी महत्त्वपूर्ण संदेश को काल के झंझावातों से बचाकर चिरशाश्वत् स्वरूप प्रदान करने का आधार माना गया है। पुराण साहित्य में वर्णन किया गया है कि गयाजी तीर्थ में 'गय शिला' पर किया गया श्राद्ध कर्म पूर्वजों को मोक्ष प्रदान करता है। राजा गय की धर्मचर्या का वर्णन महर्षि वेदव्यास ने किया है कि ''राज्य के कुशल संचालन हेतु राजा गय अपने परिचर सेवकों को नित्य ही गौ तथा अश्व भेंट किया करते थे''11 यहाँ इस श्लोक में प्रयुक्त 'शत' एवं 'सहस्र' शब्द के अभिधा आधारित गणनात्मक,शाब्दिक अर्थ को अपनाने पर यह संस्कृत श्लोक प्रकट् करता है कि- ''वे(राजा गय) हजार वर्षों तक प्रतिदिन सबेरे उठकर एक-एक लाख गौओं और सौ-सौ अश्वों का दान करते थे।'' किंतु यह शाब्दिक अनुवाद दोषपूर्ण प्रकट हो जाता है, क्योंकि सम्पूर्ण वैदिक वाड्.मय मनुष्यमात्र की आयु 'जीवेद् शरदः शतम्' आधार पर सौ वर्ष होना वर्णन करता है। अतः हजार वर्षों तक दान करने का यह कथन सुसंगत न होकर,मिथ्याभाषण करना हो जाता है। यह राज्य संचालन की कुशलता को प्रकट नहीं करता, अपितु यह तो अज्ञान के अंधकार में ले जाता है, जहां शासन कार्य की व्यावहारिकता न होकर अतिशयोक्ति का साम्राज्य उपस्थित हो गया है। शत व सहस्र शब्द के निहितार्थ को अपनाते हैं, तो यह किसी राजर्षि द्वारा अपनाये गये 'राजधर्म' को सूचित करनेवाला एक 'कूट श्लोक' होना प्रकट होता है तथा लोक परम्पराओं द्वारा समर्थित इस अर्थ को प्रकट करता है।''वे (राजा गय)अनेक वर्षों तक प्रतिदिन सबेरे उठकर पूर्णता को प्राप्त अनेक गौओं को तथा वयस्कता(पूर्णता) को प्राप्त अनेक अश्वों को(अर्थात् प्रजनन एवं दूध देने योग्य गायों का एवं अवयस्क अश्वों का ही) अपने परिचारकों को भेंट किया करते थे।

इस प्रकार गूढ़ार्थ रूप में श्रुतिज्ञान को प्रकट करनेवाला यह अनुवाद प्रचलित राजव्यवस्था के संचालन-सूत्र को प्रकट करने लगता है। यह राजधर्म को प्रकट करता है जिसमें ''राजा गय द्वारा अपने परिचारकों को दुग्ध आधारित आहारपूर्ति के लिए वयस्क गौओं का तथा शासन व्यवस्था के संचालन एवं द्रुतगति से आवागमन हेतु वयस्क अश्वों को भेंट करना तथा कुशल प्रबंधन हेतु इस कार्य को प्रतिदिन दोहराना या प्रतिदिन इसकी समीक्षा करना प्रकट करता है। इस प्रकार शत एवं सहस्र शब्द का यह गूढ़ार्थ ही राजधर्म के गूढ़तत्व को प्रकट करनेवाला होता है। यह राजनय हेतु 'गयशिला' के मुक्तिदाता अभिलेख स्वरूप को प्रकट करता है। जिसे लेखबद्ध करने के पूर्व इसके अभिलेख स्वरूप पर विचार करने हेतु विद्यानिधि श्रीगणेश को भी किंचित समय के लिए रुक जाना पड़ा था। इस गूढ़ार्थ को अपना लेना ही 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति'' आधार पर इस भारत भूमि पर युगान्तकारी परिवर्तन को लाने वाला होता है। इस प्रकार इन कूट शब्दों के गूढ़ार्थ को अपनाकर ही महाभारत ग्रंथ के मूल रूप को जाना जा सकता है। यही महर्षि वेदव्यास द्वारा एक ही वेद ज्ञान को चार भाग में विभाजित किया जाकर प्रकट करना अर्थात् धर्मरूप आत्मा के चतुष्पाद विस्तार रहस्य को प्रकट करना विदित होता है, जिसे अपनाकर विद्यानिधि श्रीगणेश को भी पंचम वेद रूप में इतिहास ग्रंथ महाभारत को लिखते समय किंचित देरी के लिए रुक जाना पड़ता था।

संदर्भ

ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

1.काव्यस्य लेखनार्थाय गणेशः स्मर्यतां मुने।(महाभारत आदिपर्व अ.1श्लोक 74)

2.अष्टौ श्लोक सहस्राणि अष्टौ श्लोक शतानि च। अहं वेद्मि शके वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा।। तच्छलोककूटमद्यापि ग्रथितं सुदृशं मुने। भेत्तुं न शक्यतेऽर्थस्य गूढत्वात् प्रश्रितस्य च।। सर्वज्ञोऽपि गणेशो यत् क्षणमास्ते विचारयन्।(महाभारत आदिपर्व अ.1श्लोक 81,82,83)

3.पुरुषं एवेदं सर्वं...।।पुरुषसूक्त ऋक्संहिता

4.द्वे विद्ये वेदितव्ये ...परा चैवापरा च।।(मुण्डकोपनिषद1.1.4)

5.गीता अ.6 श्लोक 15 6.विद्यां चाविद्यां च...।।ईशावास्योपनिषद् श्लोक 11

7.महाभारत वनपर्व अ.28श्लोक 28,29

8. महाभारत सभापर्व अ.43

9.अपराध शतं श्राम्यं.....मनः वृथाः।। (महाभारत सभापर्व अ.43श्लोक24)

10.मुण्डकोपनिषद्2.1.6

11.शतं गवां सहस्राणि.....सहस्रं परिवत्सरम्।।(महाभारत शांतिपर्व अ.29श्लोक115)